National Journal of Hindi & Sanskrit Research

ISSN: 2454-9177
NJHSR 2025; 1(62): 58-61
© 2025 NJHSR
www.sanskritarticle.com

डॉ. विनोद बाबूराव मेघशाम
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग,
क्रिस्तु जयंती विश्वविद्यालय,
बेंगलुरू – 560077

Correspondence:
डॉ. विनोद बाबूराव मेघशाम
सहायक प्रध्यापक, हिन्दी विभाग,
क्रिस्तु जयंती विश्वविद्यालय,
बेंगलुरू – 560077

रवीन्द्र कालिया कहानियों में चित्रित सामाजिक यथार्थ

डॉ. विनोद बाबूराव मेघशाम

शोधसार :

रवीन्द्र कालिया हिंदी कथा-साहित्य के एक सशक्त कथाकार हैं जिनकी कहानियाँ सामाजिक यथार्थ का प्रामाणिक चित्र प्रस्तुत करती हैं। उनकी कहानियों में मध्यवर्गीय जीवन की जटिलताएँ, पारिवारिक रिश्तों का विघटन, महानगरीय जीवन की त्रासदी, स्त्री-पुरुष संबंधों की उलझनें तथा सामाजिक ढोंग और पाखंड का गहन चित्रण मिलता है। वे समाज में व्याप्त विडंबनाओं को व्यंग्यात्मक और चुटीले अंदाज़ में प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनकी कहानियाँ पाठक को सहज ही आकर्षित करती हैं। कालिया ने विशेष रूप से उस वर्ग की मानसिकता को उकेरा है जो आर्थिक असुरक्षा और सामाजिक प्रतिष्ठा की चिंता के बीच निरंतर संघर्षरत है। उनकी कहानियों में स्त्री की स्थिति और बदलते सामाजिक मूल्यों का भी मार्मिक प्रस्तुतीकरण हुआ है। इस प्रकार रवीन्द्र कालिया की कहानियाँ केवल साहित्यिक मनोरंजन नहीं करतीं, बल्कि हमारे समाज के वास्तविक जीवन का दर्पण बनकर सामाजिक इतिहास की गवाही भी प्रस्तुत करती हैं।

बीज शब्द : हिंदी कहानी, सामाजिक यथार्थ, मध्यवर्गीय जीवन, पारिवारिक विघटन, शहरी संस्कृति, स्त्री-पुरुष संबंध, व्यंग्य और विडंबना

मूलआलेख :

हिंदी साहित्य में रवीन्द्र कालिया का नाम उन रचनाकारों में लिया जाता है, जिन्होंने अपने परिवेश और समाज से गहरा जुड़ाव बनाए रखते हुए लेखन को एक नई दिशा दी। उनकी रचनात्मकता इतनी सशक्त है कि यथार्थता उनके साहित्य में दिखाई देती है। उनकी कहानियाँ और उपन्यास न केवल पढ़ने वाले को प्रभावित करते हैं, बल्कि समाज के विभिन्न परिवेश से परिचय कराते हैं। मध्यवर्गीय जीवन के छोटे- बड़े संघर्षों, और विडंबनाओं को उन्होंने बड़ी ही सरलता और गहराई से अपने साहित्य में उतारा है। रवीन्द्र कालिया समाज की नब्ज़ पकड़ने में माहिर हैं। उनकी पैनी दृष्टि समाज के हर एक वर्ग एवं क्षेत्र के कोने को छू लेती है । यही कारण है कि उनकी कहानियों में जीवन के विविध रंग और विरोधाभास एक साथ दिखाई देते हैं। साठोत्तरी पीढ़ी के वे ऐसे लेखक हैं, जो अपने तेज़ बुद्धिवान, चुटीले हास्य और बेबाक अंदाज़ के कारण अपनी अलग पहचान रखते हैं । उनके हास्य-व्यंग्य साहित्य जगत में मशहूर हैं और उनकी लेखनी पाठकों को गुदगुदाने के साथ-साथ सोचने पर भी मजबूर कर देती हैं । संगति में असंगति खोज लेना उनकी अनूठी कला है, जो उनकी कहानियों और संस्मरणों दोनों में चरम पर दिखाई देती है। कालिया जी के कहानियों में 'मानव-नियति' और 'मानव-स्थिति' जैसे मूल प्रश्नों को सामने रखते हैं। रिश्तों की अमानवीयता और समय की निर्ममता को सीधी, संक्षिप्त और प्रभावशाली भाषा में व्यक्त करने की कला से वे अपनी अलग पहचान बनाते है। उनकी कहानियाँ रूप और संरचना में संक्षिप्त तो है ही साथ ही प्रभावपूर्ण भी होती हैं । प्रारंभिक रचनाओं से ही उन्होंने हिंदी कहानी को यथार्थ की ठोस ज़मीन पर खड़ा किया।

सन् 1960 का दशक हिंदी साहित्य के इतिहास में एक महत्वपूर्ण पहचान रखता है । इस कालखंड में नई पीढ़ी के रचनाकारों ने साहित्य की पुरानी परंपराओं से अपना एक अलग मार्ग अपनाया और नए विचार-दृष्टिकोण को साहित्य के केंद्र में रखा । प्रगतिशील चेतना और यथार्थपरक दृष्टि से प्रेरित होकर इन लेखकों ने कहानी को अभिव्यक्ति का सशक्त और प्रभावी माध्यम बनाया। विषयवस्तु की विविधता, भाषा की ताजगी और दृष्टिकोण की गहराई – इन सबने मिलकर इस दौर की कहानियों को विशिष्ट बनाया । इस पीढ़ी में श्रीकांत वर्मा, ज्ञानरंजन, गिरिराज किशोर, दूधनाथ सिंह, गंगाप्रसाद विमल, विजयमोहन सिंह, काशीनाथ सिंह, विश्वेश्वर, महीप सिंह, रमेश उपाध्याय और रवीन्द्र कालिया जैसे प्रतिभाशाली रचनाकारों ने हिंदी साहित्य को समृद्ध किया । उपरोक्त कहानीकारों में से अपनी एक विशिष्ट दृष्टि और लेखन शैली को अपनाते हुए अपनी अलग पहचान बनाने वाले साहित्यकार है रवीद्र कालिया। क्योंकि उस समय के कथा-साहित्य में समाज की जटिलताओं और बदलते मूल्यों का यथार्थ चित्रण किया है। सन् 1961 में उनकी पहली कहानी 'सिर्फ एक दिन' प्रकाशित हुई। यह कहानी रवीद्र कालिया के रचनात्मक सामर्थ्य का परिचय कराती है । इसके साथ ही उन्हें उस समय के कहानीकारों में गौरवपूर्ण स्थान दिलाया है । इसके साथ रवीद्र कालिया का साहित्य छठे दशक से बीसवीं शताब्दी के अंतिम वर्षों तक इस संसार में निरंतर विकसित होता गया ।

रवीन्द्र कालिया ने अपने साहित्य के माध्यम से उस समय समाज में चलनेवाले परिस्थितियों को अच्छी तरह समझकर उसे अपने साहित्य में यथार्थता को गहन संवेदनशीलता के साथ चित्रित किया। इसी के साथ उन्होंने 'अकहानी' के तत्वों को पहचानकर 'हिंदी कहानी' को एक नई दिशा दी। उनके लेखन में लगभग 42 कहानियाँ, तीन उपन्यास और संस्मरण आदि शामिल हैं ।

इसमें उनके कहानियाँ शहरी जीवन, आधुनिकता, जीवन की जटिलता, मध्यम वर्गीय संघर्ष और जीवन के यथार्थताओं से समाज का परिचय कराते है। इसके साथ उनके उपन्यास में भी आधुनिकता, शहरी जीवन, सांस्कृतिक धरोहर का यथार्थ को उद्घाटन करतीं है । इसमें आधुनिक जीवन के सकारात्मक तत्वों को आत्मसात करने की क्षमता भी दर्शाती हैं ।

उनकी शुरुआती कहानियों में ही एक अलग दृष्टि, सहज भाषा और तीखा यथार्थ दिखाई देता है। 'नौ साल छोटी पत्नी' उनकी उन शुरुआती कहानियों में से एक है, जिसने उन्हें व्यापक पहचान दिलाई । इस कहानी में रिश्तों की जटिलता, मानसिक द्वंद्व और आधुनिक जीवन के यथार्थ को जिस साहस और संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया, वह उस समय की पारंपरिक कहानीकारों से अलग था। इस संदर्भ में आलोचक विजय मोहन सिंह अपनी आलोचना पुस्तक 'आज की कहानी' में लिखते है कि "रवीन्द्र कालिया ने प्रारम्भिक कहानियों के द्वारा ही अपने को चर्चा का विषय बना लिया था बल्कि उन्होंने एक छोटे मोटे धमाके के साथ हिन्दी कहानी में प्रवेश किया । उस धमाके का नाम था 'नौ साल छोटी पत्नी।"[1] उपरोक्त कहानी के बारे में जब विजय सिंह का कहना था कि कालिया का साहित्यिक आगमन साधारण नहीं था, बल्कि उन्होंने कुछ ऐसा लिखा जिसने साहित्यिक क्षेत्र में हलचल पैदा कर दी और उसके साथ-साथ साहित्य जगत में अपने नाम की पहचान एक अलग तरह से किया था।

विजय सिंह के बाद साहित्यकार मधुरेश जी रवीद्र कालिया के साहित्य संबंध में लिखते है कि – "रवीन्द्र कालिया जीवन की विसंगतियों और विद्रुपताओं के कहानीकार हैं । तथा अर्थहीनता के बोध को अलग-अलग संदर्भों में सम्प्रेषित करते हैं । इन विसंगतियों को वे व्यंग्य के माध्यम से उद्बोधित करते हुए हर प्रकार की व्यवस्था और स्थापित मूल्यों को अस्वीकार की मुद्रा में अपनाते हैं । दाम्पत्य सम्बन्धों पर प्रेम के प्रवाह मंडल को छोड़कर वे उनकी वास्तविकताओं को पहचानते हैं । इन स्थितियों को वे सहर्ष सामाजिक परिवेश देखने की अनिवार्यता भी समझते हैं ।"[2] इस वाक्य से पता चलता है कि कालिया एक साधारण कहानीकार नहीं थे वें परिस्थितियों का सिर्फ आलोचना नहीं करते बल्कि उन्हें सामाजिक संदर्भ में देखने की जरूरत को समझते हैं । यानी, वे यह मानते हैं कि इन विसंगतियों और कठिनाइयों को केवल नकारना नहीं चाहिए, बल्कि उन्हें समझना और स्वीकार करना भी आवश्यक है, क्योंकि वे समाज और जीवन का हिस्सा हैं । इसलिए रवीद्र कालिया के कहानियों में यथार्थता दिखाई देती है ।

'नौ साल छोटी पत्नी' रवीन्द्र कालिया की एक अत्यंत लोकप्रिय और चर्चित कहानी है। यह कहानी वैवाहिक जीवन के साथ-साथ भावनात्मक संवेदनाओं को भी गहराई से व्यक्त करती है । इसमें अनमेल विवाह की समस्या को सूक्ष्मता से उकेरा गया है और दांपत्य जीवन की जटिलताओं को बड़े सहज ढंग से चित्रित किया गया है । कहानी का एक विशेष पहलू यह है कि पत्नी अपने पुराने प्रेम की चिट्ठियाँ लेकर आती है, जिन्हें पति मनोरंजन के रूप में देखता है, न कि अपमान या आक्रोश के भाव से। रवीन्द्र कालिया ने इस प्रसंग के माध्यम से पति के उदार और परिपक्क मानसिकता वाले व्यक्तित्व को उभारा है। जहाँ कई नवविवाहित दंपतियों के जीवन में ऐसे प्रसंग संबंधों में दरार डाल सकते हैं, वहीं कालिया का पात्र कुशल इन परिस्थितियों से बिल्कुल भिन्न प्रतिक्रिया करता है । वह न तो किसी प्रकार का मानसिक शोषण करता है और न ही पत्नी को दोषी ठहराता है, बल्कि स्थितियों को सहजता और परिपक्कता से स्वीकार करता है । कहानी में जीवन के छोटे-बड़े उतार-चढ़ाव, भावनात्मक द्वंद्व और मानवीय रिश्तों की बारीकियों को बड़े सजीव और यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है । यही कारण है कि यह

कहानी न केवल पाठकों के बीच लोकप्रिय हुई, बल्कि आधुनिक दांपत्य संबंधों के यथार्थ की एक सशक्त अभिव्यक्ति भी मानी जाती है । इसी कहानी के मुख्य पात्र कुशल एक जगह अपनी पत्नी से कहता है कि – "मुझे लगता है कि तुम कहानियाँ लिखती रहो तो बहुत बड़ी लेखिका हो जाओगी ।"[3] इस वाक्य से यह पता चलता है इसमें अपनी पत्नी का प्रोत्साहन बढ़ाते हुए आधुनिकता का परिचय कराता है । यह उस समय की समाज की यथार्थता दिखाई देती है । उनकी और एक प्रसिद्ध कहानी है 'सिर्फ एक दिन' । इसमें कालिया जी ने समाज में शिक्षित बेरोजगार युवक के जीवन और मध्यमवर्गीय परिवार की चिंताओं को चित्रित किया गया है । आज के युवा बड़े-बड़े सपने देखते हैं और उच्च पदों की आकांक्षा रखते हैं, लेकिन छोटे पदों को महत्व नहीं देते। शिक्षा पूरी होने के बाद भी वे बड़े पद की चाह में अवसरों को नज़रअंदाज़ कर देते हैं, जिससे परिवार चिंतित रहता है । भारतीय परिवारों के लिए नौकरी, चाहे बड़ी हो या छोटी, आर्थिक स्थिरता का साधन होती है। कहानी का नायक बलराज भी ऐसे ही सपनों में खोया है। कहानी की शुरुआत उसके सोते हुए दृश्य से होती है, जब उसकी माँ चाय लेकर आती है, पर वह उदासीन रहता है । उसका दिन ब्रश करने, सिगरेट पीने और अखबार पढ़ने में बीतता है। नौकरी की चिंता उसे नहीं, बल्कि उसके माता-पिता को खाए जाती है। कालिया ने इस पात्र के माध्यम से युवाओं के सपनों और पारिवारिक जिम्मेदारियों के बीच के तनाव को सजीव रूप में प्रस्तुत किया है। 'सिर्फ एक दिन' कहानी के पात्र बलराज के पिता के अखबार पढने के संदर्भ को बलराज बताता है कि "मै रोज सोचने पर विवश हो जाता हूँ कि पापा अख़बार हाथ में आते ही समाचार क्यों नहीं पढ़ते और यदि उन्हे सिच्युएशन वेकेंट कालम ही पढ़ना होता है, तो ये सब मुँह में भी पढें जा सकते है ।"[4] इस कथन से भारतीय युवा जो आधुनिकता के शैली में अपना जीवन को जी रहे उस युवाओं का दृष्टिकोन अपने परिवार या अपने पिता के प्रति किस तरह है उसे दर्शाता है । यह कहानी भारतीय मध्यम वर्ग के छात्रों के सामाजिक सत्य को रेखांकित करती है। इसके साथ-साथ यह कहानी भारतीय मध्यम वर्गीय परिवार के लिए नौकरी कितनी महत्वपूर्ण है और अपने बच्चों के प्रति किस तरह संवेदना दिखाते है उसका भी यथार्थता को चित्रित किया है ।

रवीद्र कालिया आधुनिक युवाओं की जीवनशैली और मानसिकता को अपनी कहानी 'थके हुए' के माध्यम से उजागर करते है। क्योंकि इस कहानी में आधुनिक शैली से जुड़े हुए युवा पीढ़ी का चित्रण है जो जीवन को अत्यधिक गंभीरता से न लेकर सहजता, मस्ती और अनुभवों की तलाश में रहते है। कहानी का मुख्य पात्र ऑफिस के काम से ऊब चुका है। काम के बोझ और दिनचर्या से थकान महसूस करता है और सुबह उठते ही दफ्तर जाने का बोझ उसे खलने लगता है । वह प्रेम, आनंद और हल्की-फुल्की बातों की ओर आकर्षित है। इसके साथ-साथ वह पात्र अपने प्रेमिका प्रमिला के नाम पत्र लिखना, कॉफी हाउस जाना और छोटी-छोटी बातों में खुशियां ढूँढना उसके स्वभाव का हिस्सा बनाता है ।

इसके साथ रवीद्र कालिया जी 'त्रास' कहानी में घर से दूर शहर में रहने वाले युवाओं की जीवनशैली, उनके व्यसन और भीतर छिपे मृत्यु-बोध का मार्मिक चित्रण किया है । कहानी का नायक शहर में नौकरी करता है । शहरी जीवन के प्रभाव से वह कभी सुबह जल्दी नहीं उठता है । कई वर्षों बाद एक दिन उसकी माँ उससे मिलने शहर को आती है । जब वह सुबह जागता है तो उसे आश्चर्य होता है कि शहर की हलचल कितनी जल्दी शुरू हो जाती है - दूध की कतारें, अखबारों की बिक्री, लोगों की भागदौड़ आदि। इसके साथ माँ जब बेटे के कमरे में प्रवेश करती है, तो उसका मन विचलित हो उठता है क्योंकि चारों ओर सिगरेट की राख, बिखरे टुकड़े और खाली बीयर व व्हिस्की की बोतलें बेटे की जीवनशैली की तस्वीर खींचती हैं । यह देखकर माँ गहरे चिंतन में डूब जाती है । उसे लगता है कि बेटा किसी मानसिक तनाव या आंतरिक पीड़ा से गुजर रहा है । बातचीत के दौरान माँ को यह शंका भी होती है कि कहीं उसके जीवन में कोई असफल प्रेम या भावनात्मक संकट तो नहीं है । बेटे की किताबों को देखकर और उसकी आदतों का निरीक्षण कर वह उसके स्वास्थ्य और भविष्य को लेकर चिंतित हो उठती है। इसे लेखक माँ के माध्यम से बताते है कि "ये कौन–सी गोलियाँ है? माँ ने कहा, तुम नहीं बताओंगे तो मै खुद खाकर देख लूँगी।..... वह बोलता जा रहा था और माँ उसकी और ताक रही थी। जैसे अपनी आँखों की सामने उसकी मृत्यु देख रही हो।"[6] इसमें आज के युवा किस तरह अपना जीवन शैली को अपनाये है । इसका प्रभाव अपने माता पिता पर किस तरह पड़ता है इसका यथार्थ चित्रण मिलता है। 'खोटे सिक्के' रवीन्द्र कालिया की वह कहानी है जो रामजस हलवाई जैसे सरल और ईमानदार व्यक्ति के जीवन के माध्यम से समाज के कठोर यथार्थ को सामने लाती है । रवीद्र कालीया इस कहानी में अविश्वास, चरित्रहीनता और प्रवंचना जैसे विषयों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। इस कहानी में लिखते है कि कैसे आजकल लोग विश्वास के नाम पर धोखा देते हैं और भोले-भाले व्यक्तियों का शोषण करते हैं। इस तरह कहानी के पात्र रामजस को भी खोटे सिक्कों के माध्यम से ठगा जाता है, बल्कि उसके जीवन में आई अनंता का चरित्र भी उन्हीं खोटे सिक्कों जैसा साबित होता है। रामजस जैसा सरल स्वभाव का व्यक्ति स्त्री के कुलटेपन को भी समझ नही पाता। कहानी के एक संदर्भ को रेखांकित करते हुए लेखक लिखते है कि कहानी का पात्र रामजस वह तो अपनी पत्नी के स्वभाव को न समझते हुए उसके सौंदर्य पर मोहित होकर कहता है

कि - "क्या बात है, अन्नी? आज तो बहुत खूबसूरत नजर आ रही हो? अनंता के हाथ बर्फ से ठंडे थे। वह थूक निगलकर कुछ कहना ही चाहती थी कि कोठरी से रामसरन की आवाज आई ।"[7] केवल कहानी का नाम ही खोटे सिक्के नहीं है बल्कि पत्नी के रूप में आई हुई अनंता भी खोटे सिक्के के समान निकलती है । इसमें रामजस की पत्नी होने का ढोंग करती हैं तो दूसरी तरफ अन्य पुरुष के साथ अनैतिक संबंध रखती है इस चरित्रहीन स्त्री को समाज के उस चरित्रहिन स्त्री का यथार्थ को दिखाता है । कहानी यह भी संकेत देती है कि छल-कपट केवल पैसों तक सीमित नहीं, बल्कि रिश्तों और मानवीय व्यवहार में किस तरह व्यक्ति छल जाता है उस यथार्थ को उजागर किया है ।

आधुनिक काल में लोग वैवाहिक जीवन की उदासीनता और पति-पत्नी के संबंधों में घटते आकर्षण का यथार्थ चित्रण रवीद्र कालिया अपनी कहानी 'पत्नी' में करते है। कहानी का पात्र गुरतेज, जो शहरी जीवन से प्रभावित है, अपनी पत्नी भरपाई के प्रति उदासीन और नीरस व्यवहार करता है । जबकि भरपाई में वे सभी गुण मौजूद हैं जो एक भारतीय नारी के आदर्श रूप को दर्शाती हैं। स्वाभाविक रूप से तीन-चार बच्चों के जन्म के बाद भरपाई का सौंदर्य कम हो जाता है, और गुरतेज का उसके प्रति पत्नी की भावना को इस प्रकार से दर्शाया है। कि भरपाई अपने पति गुरतेज से कहती है "तुम दूसरा ब्याह कर लो । मैं अब तुम्हारे जोग नहीं रही ।"[8] इस कथन में कालीया उस महिला को दर्शाया है कि जो परिवार और अपने पती के सुख के लिए खुद की भावनाओं की बली चढाते हुए अपने जगह को दूसरे स्त्री को समर्पित करना चाहती है ।

इस तरह कालीया अपनी कहानी 'चाल' में बम्बई शहर की जीवन शैली को दिखाया है । शहर में रहनेवाले लोग कैसे जिन्दगी से जूझ रहे है उसे यथार्थ के साथ दर्शाने का प्रयास किया है । क्योंकि बम्बई शहर की एक 'चाल' (बस्ती) में बसे लोगो की स्थिति का वर्णन इस कहानी में करते है । कहानी में मध्यमवर्गीय परिवार की जीवन के प्रति आशा भाव रखने वाले व्यक्ति की कथा को चित्रित करती है। इस कहानी के बारे में प्रसिद्ध कथाकार श्री उपेन्द्रनाथ 'अश्क' ने 'चाल' की सराहना में रवीन्द्र कालिया को एक लंबा पत्र लिखा जिस की कुछ पंक्तिया इस प्रकार थी - "मुझे चाल और 'बहिर्गमन'(ज्ञानरंजन) में से बेहतर कहानी चुनना हो तो मैं 'चाल' को चुनूँगा ।"[9] इस कहानी में प्रति एक प्रकार से आर्थिक रूप से पत्नी पर आश्रित है । धीरे-धीरे वह कमाऊ महिला यौन-स्तर पर भी पति पर आश्रित न रहकर उस पर हावी होना चाहती है। किरण अपने पति से कहती है - "हमेशा स्त्री पर हावी रहना चाहते हो। तुम चाहते हो, वह तुम्हारे सामने रोती रहे और तुम आँसू पोंछ कर बड़पन दिखाते रहो। तुम अपने को मन में कितना भी उदार समझो, स्त्री के बारे में तुम्हारे विचार सदियों पुराने है । तुम चाहते हो, वह बिना किसी प्रतिरोध के तुम्हारे इस्तेमाल में आती रहें। यही समझते हो न?"[10] इस से समाज और परिवार में स्त्री कि स्थिति एवं उसकी मानसिकता की यथार्थ जीवन को दर्शाती है।

उपसंहार :

रवींद्र कालिया के कहानियों में हम यह देख सकते हैं कि इनके द्वारा लिखी गई कहानिया आज के सामाजिक स्थिति को यथावत रूप से दर्शाती है । जिसमें 'नौ साल की पत्नी' के माध्यम से अनमेल विवाह और पति के समझदारी को पाठकों के सामने रखते हैं । इसी के साथ में 'थके हुए' लोगों के द्वारा आज के युवा मन की जो काम करने की शैली के साथ में उनकी की मानसिकता स्थिति का चित्रण भी दर्शाया है । 'त्रास' कहानी के माध्यम से रवीद्र कालिया लिखते है कि शहरी जीवन में युवा कैसे एक अलग प्रकार के व्यसन से लिप्त हो जाते हैं और माता-पिता के लिए उनके स्वास्थ्य एवं भविष्य की चिंता खाई जाती है इस सामाजिक यथार्थ का चित्रण किया है। 'खोटे सिक्के' कहानी में स्त्री के चरित्रहीन स्वभाव के साथ सरल व्यक्ति को किस तरह से छला जाता है उसको दर्शाया गया है तो 'पत्नी' कहानी में भरपाई के द्वारा पारिवारिक जीवन को समर्पित नारी के स्वभाव को भी देखने को मिलता है । इस तरह से रवींद्र कालिया के कहानियों में शहरी जीवन, आधुनिकता, जीवन की जटिलता, मध्यम वर्गीय संघर्ष और जीवन के यथार्थता को बहुत ही निडर एवं निर्भीकता के साथ चित्रण किया है।

संदर्भ ग्रंथसूचि :

1. मेरी प्रिय कहानियाँ – रवीद्र कालिया – पृष्ठ. संख्या - भूमिका
2. रवीन्द्र कालिया की कहानीयाँ – रवीद्र कालिया, पृष्ठ. संख्या - 02
3. मेरी प्रिय कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ. संख्या –12
4. मेरी प्रिय कहानीयाँ – रवीन्द्र कालिया – राजपाल प्रकाशन, दिल्ली पृष्ठ. संख्या – 21
5. रवीन्द्र कालिया की कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया – वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ. संख्या – 12
6. पाँच बेहतरीन कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया,वाणी प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ. संख्या – 19
7. 'खोटे सिक्के' रवीन्द्र कालिया की कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया, पृष्ठ. संख्या – 104
8. रवीन्द्र कालिया की कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ संख्या – 132
9. मेरी प्रिय कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, भूमिका - ममता कालिया
10. मेरी प्रिय कहानीयाँ, रवीन्द्र कालिया, राजपाल प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ. संख्या- 124